

विविध विषयों पर काम करते हुए भाषाई दक्षताओं का विकास

एवेता विश्वकर्म

भाषा का शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता है, बल्कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित जैसे अन्य विषयों की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की कक्षाएँ होती हैं। इस समझ को केन्द्र में रखते हुए इस लेख में उन विद्यार्थियों में, पढ़कर समझने और लिखकर अभिव्यक्त करने के कौशल विकास के लिए अनुभवपरक तरीके सुझाए गए हैं जिनमें माध्यमिक स्तर पर भाषा की अपेक्षित दक्षताएँ विकसित नहीं हो पाती हैं। इन सुविचारित तरीकों से विद्यार्थी भाषाई कौशलों के साथ ही विभिन्न विषयों की शब्दावलियों, अवधारणाओं और उनके अन्तर्विषयी सम्बन्धों को भी समझने के अवसर पाते हैं।

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषा की बुनियादी दक्षताओं का विकास करना है। अपेक्षा होती है कि माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की दक्षताएँ पूरी तरह विकसित हो जाएँ। लेकिन अधिकांश विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर तक भी पढ़कर समझने और लिखने के कौशल विकसित नहीं हो पाते। इससे विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान आदि की अवधारणाओं को समझने, अर्थ निर्माण करने, पाठ से जुड़ने और अभ्यासों को करने में बाधाएँ आती हैं। इन बाधाओं से विद्यार्थी अपने स्तर अनुसार सीखने और आगे बढ़ने में रुकावट महसूस करते हैं।

इस वजह से माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों के सामने कुछ इस तरह की चुनौतियाँ आती हैं :

- सबसे पहले प्रश्न तो यही होता है कि माध्यमिक स्तर पर जिन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने में चुनौतियाँ हैं, उनके साथ विषयों की अपेक्षित दक्षताओं पर कैसे कार्य किया जाए?
- यदि इन विद्यार्थियों के साथ अलग से केवल पढ़ने-लिखने के शुरुआती कौशलों पर कार्य किया जाए तब वे विषय सम्बन्धी कक्षा स्तर की अवधारणाओं में पीछे हो जाते हैं।
- विषय सम्बन्धी अवधारणाओं या कक्षा स्तर की दक्षताओं पर कार्य किया जाए तो सम्भवतः अवधारणाओं को सुनकर बातचीत के द्वारा वे समझ लें, लेकिन स्वयं से पढ़ने-लिखने सम्बन्धित अभ्यासों को करने में सक्षम न हों।

“ कक्षा में विद्यार्थियों की स्थिति को समझने के लिए आकलन प्रभावी प्रक्रिया है। विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धी दक्षताओं के साथ-साथ इस बात का भी आकलन करना ज़रूरी होता है कि विद्यार्थी विषय सम्बन्धी अवधारणाओं व दक्षताओं में सीखने के स्तर पर कहाँ हैं? ”

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के साथ पढ़ने-लिखने एवं विषय-आधारित दक्षताओं पर अलग से कार्य करने के साथ-साथ विषय शिक्षण के दौरान भी पिछली दक्षताओं को साथ लेकर चलना ज़रूरी हो जाता है। इसके लिए शिक्षण के प्रभावी तरीके नियमित विषय कक्षाओं के दौरान ही नहीं, बल्कि अतिरिक्त कक्षाएँ संचालित कर भी खोजने होंगे। बस, यहाँ यह समझना आवश्यक है कि जिन विद्यार्थियों को सीखने से सम्बन्धित चुनौतियाँ आ रही हैं उनके साथ नियोजित और व्यवस्थित ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसे में यदि कोई विद्यार्थी अपेक्षित मूलभूत कौशलों को हासिल नहीं कर पाया है तब भी एक शिक्षक होने के नाते उसकी कठिनाइयों को समझने और उसके अनुरूप अपेक्षित सहायता मुहैया कराए जाने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त परिस्थितियाँ जटिल हैं। अब सवाल है, इन पर काम कैसे किया जाए? ऐसे कौन-से तरीके हो सकते हैं जो विद्यार्थियों को कक्षा से जोड़ने में मदद करें? इस सम्बन्ध में माध्यमिक शाला के कुछ शिक्षकों द्वारा किए जा रहे कक्षा कार्यों को समझने का प्रयास किया गया, और यह देखा गया कि वे किस प्रकार इन चुनौतियों से उबरने के लिए कार्य कर रहे हैं जिससे विद्यार्थियों का सीखना सुनिश्चित हो।

यहाँ हम शिक्षकों द्वारा अपनाए जा रहे अभ्यास व अन्य प्रक्रियाओं को कुछ विषयों के उदाहरण के साथ समझते हैं, जो कक्षाओं में अपनाई जा सकती हैं :

आकलन

कक्षा में विद्यार्थियों की स्थिति को समझने के लिए आकलन एक प्रभावी प्रक्रिया है। विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धी दक्षताओं के साथ-साथ इस बात का भी आकलन करना ज़रूरी होता है कि वे विषय सम्बन्धी अवधारणाओं व दक्षताओं में सीखने के स्तर पर कहाँ हैं। क्या वे अपने आस-पास के अनुभवों के आधार पर उदाहरण दे पाते हैं? यह समझ शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ कार्य करने में मदद करेगी। उदाहरण के तौर पर, विज्ञान में

वस्तु का नाम	पदार्थ जिससे वह वस्तु बनी है (प्लास्टिक/लकड़ी/काँच/लोहा/ अन्य)	चुम्बक द्वारा आकर्षित होती है? (हाँ/नहीं)	
		पूर्वानुमान	अवलोकन
पेंसिल	लकड़ी	नहीं	नहीं
इंजेक्टर (रबड़)	रबर	नहीं	नहीं
स्केल	लोहा	हाँ	हाँ
स्केल	प्लास्टिक	नहीं	नहीं
इंजेक्टर	रबर	नहीं	नहीं
केंचू	लोहा	हाँ	हाँ
बाल	प्लास्टिक	नहीं	नहीं
मिक्का	लोहा	नहीं	नहीं
गाड़ी	लकड़ी	हाँ	नहीं
लिफ्ट	प्लास्टिक	नहीं	नहीं

चित्र 1: कौन-सी वस्तु किस पदार्थ या सामग्री से बनी है, और चुम्बक से आकर्षित होती है के बारे में विद्यार्थियों के साथ किया गया अभ्यास

विद्युत परिपथ में ताप के प्रभाव को समझने पर कार्य करते हुए यह देखना कि कक्षा 8 में विद्यार्थी विद्युत परिपथ से सम्बन्धित किन प्रतिफलों को हासिल कर पा रहा है। यानी, क्या वह स्वयं से विद्युत परिपथ में ताप के प्रभाव का विश्लेषण कर पाता है? यदि नहीं, तब उसके साथ पहले विद्युत परिपथ के अलग-अलग घटकों को समझने के लिए काम करना होगा।

भाषाई दक्षताओं के आकलन के लिए अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता नहीं है। यह विषय शिक्षण के दौरान ही किया जा सकता है। शिक्षिका द्वारा सुझाए गए कुछ तरीकों को देखते हैं :

- किसी विषय के पाठ पर चर्चा के दौरान विद्यार्थियों से प्रश्न करना, उनकी प्रतिक्रिया जानना। यह देख पाना कि वे क्या केवल जानकारी-आधारित प्रश्नों के उत्तर दे पाते हैं, या किसी अवधारणा को स्पष्ट रूप से बता पाते हैं।
- विद्यार्थियों को व्यक्तिगत या समूह में पाठ पढ़ने के मौक़े देना, और इस दौरान उनकी पढ़ने की प्रगति का अवलोकन करना। उदाहरण के लिए, कौन विद्यार्थी प्रवाह से पढ़ पा रहा है; किसको पढ़ने में चुनौतियाँ हैं; वे पढ़े गए पाठ से मुख्य बिन्दुओं को बता पाते हैं या नहीं; आदि।
- विद्यार्थियों को किसी विषय या अवधारणा को चित्र, फ़्लो चार्ट आदि के रूप में प्रस्तुत करने एवं उसका विवरण लिखने के लिए कहना। उदाहरण के लिए, स्विच चालू होने की स्थिति में विद्युत परिपथ कैसे काम करता है, रक्त परिसंचरण तंत्र, आदि अवधारणाओं को चित्र द्वारा प्रस्तुत करना, और उस प्रक्रिया को बिन्दुओं में लिखना।

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रश्नोत्तर, चर्चा, आदि के माध्यम से भी अवलोकन करते हुए विद्यार्थियों की समझ का आकलन किया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर की अपेक्षा माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी के अनुभव और कौशलों में एक स्तर का विकास हो चुका होता है। भले ही वह पढ़ने-लिखने में दक्ष न हो, पर अवधारणाओं को सीखने-समझने में उसकी गति पहले की अपेक्षा बढ़ जाती है। विषय सम्बन्धी आकलन, विषय की अवधारणाओं या थीम को आधार बनाते हुए किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षक द्वारा सम्बन्धित अवधारणा या थीम में कक्षा के अनुरूप अपेक्षाओं और सीखने के प्रतिफलों को देखना-समझना आदि कारगर होगा। फिर आकलन के अनुसार समूह बनाकर शिक्षण योजना तय करना सम्भव होता है।

सामान्य भाषा से विषय की भाषा की ओर

प्रत्येक विषय की अपनी भाषा, अपनी शब्दावली होती है। अतः आवश्यक है कि विद्यार्थियों के साथ काम के दौरान सामान्य भाषा को आधार बनाते हुए विषय की भाषा और शब्दावली की ओर भी बढ़ा जाए। यह उनके लिए विषय की अवधारणाओं को समझने में एक पुल का काम करेगा, और मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ पढ़कर समझने के कौशल के विकास में भी सहायक होगा।

विज्ञान की कक्षा में शिक्षिका विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए हर पाठ से सम्बन्धित शब्दावलियों पर सबसे पहले कार्य करती हैं। इसमें वे शब्दावलियों को आसान या बोलचाल वाले शब्दों से जोड़ती हैं। पहले वे सामान्य भाषा एवं विषय की शब्दावलियों को बोर्ड पर लिखती व उन पर चर्चा करती हैं, फिर पाठ पर काम करती हैं। बाद में ये शब्दावलियाँ दीवार पर लगा दी जाती हैं। शब्दावलियों के कुछ उदाहरण हैं—ताप को गर्म की अवधारणा के साथ जोड़ना; ट्रेकिया - साँस लेने वाली नली या श्वास नली; लैरिक्स - स्वरयंत्र, चुम्बकीय पदार्थ - जो चुम्बक से आकर्षित होता है; परिपथ - धारा के बहने का रास्ता; ऊर्जा - कार्य करने की क्षमता; परावर्तन - प्रकाश का टकराकर लौटना; अपवर्तन - प्रकाश का आर-पार गुज़रना; पारदर्शी - जिसके आर-पार देखा जा सके; आदि।

यह शब्दावलियों तक सीमित नहीं था। पाठ पर चर्चा करना, समझना, आदि के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए पढ़ने-लिखने के अन्य मौक़े भी बनाए गए। जिन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने में चुनौतियाँ हैं, उनके प्रश्नों पर बात करते हुए उनके उत्तर बोर्ड पर लिखे गए। उन्हें अपनी कॉपी में लिखने के लिए कहा गया। विद्युत परिपथ का पाठ पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से अवधारणाओं से जुड़े कुछ छोटे प्रश्न पूछे गए। जैसे—परिपथ से स्विच हटाने पर क्या बल्ब जलेगा? हाँ या नहीं? और क्यों? परिपथ में से वायर हटाने पर क्या बल्ब जलेगा? यदि बल्ब को हटा दिया जाए तो क्या होगा? चर्चा के साथ इनके उत्तरों को भी लिखा गया। इन प्रक्रियाओं से पाठ समझना आसान हो जाता है, और वे विद्यार्थी भी कक्षा में भागीदारी कर पाते हैं जो अभी कक्षा स्तर पर नहीं हैं।

कक्षा का वातावरण

वातावरण से मेरा आशय कक्षा में उपलब्ध प्रिंट से है। विद्यार्थियों के आस-पास लगी सामग्री उन्हें विभिन्न शब्दों, अवधारणाओं से बार-बार गुजरने के मौके देती है। ऐसे में, जो विद्यार्थी विस्तृत टेक्स्ट को पढ़ने में असहज हैं, उन्हें इस सामग्री से पढ़ने के अनुभव मिलते हैं। हाँ, यह आवश्यक है कि सामग्री उनके स्तर और सीखने की आवश्यकता के अनुसार हो। जैसे-विद्यार्थियों द्वारा सीखे गए शब्दों को दीवार पर लगाना, प्रत्येक अवधारणा पर कार्य करने के दौरान मुख्य शब्दावली के चार्ट लगाना, किसी अवधारणा को फ्लो चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना, आदि। कक्षा में विद्यार्थी लिखे गए शब्दों को पढ़ रहे थे। फ्लो चार्ट के माध्यम से वे किशोरावस्था और विद्युत की अवधारणा को स्पष्ट कर पा रहे थे, लेकिन यह प्रिंट दीवार तक सीमित नहीं था।

उदाहरण के तौर पर, शिक्षिका ने रक्त परिसंचरण तंत्र के चित्र को विद्यार्थियों के साथ मिलकर ज़मीन पर बनाया, और लेबल किया। कक्षा में ऐसे विद्यार्थी भी, जो ठीक से पढ़-लिख नहीं पा रहे थे, उस पूरी प्रक्रिया को सजहता से समझा पा रहे थे, साथ ही लेबल किए गए शब्दों को पहचान पा रहे थे। यहाँ शिक्षिका ने विषयवस्तु के साथ-साथ भाषा पर भी ज़ोर दिया, और उनके लिए पढ़ने के अवसर बनाए।

स्तरवार शिक्षण अधिगम सामग्री का इस्तेमाल

स्तरवार शिक्षण सामग्री और गतिविधियों का संयोजन विद्यार्थियों को क्रमिक रूप से आगे ले जाने में मदद करता है। किसी विषय की अवधारणाओं को आधार बनाकर ऐसी सामग्री का निर्माण / इस्तेमाल करना जो उनका सीखना आसान बनाए। जैसे, सामाजिक विज्ञान में नक्शे की अवधारणा पर कार्य के लिए कक्षा में नक्शा उपलब्ध होना ज़रूरी है जिस पर विद्यार्थियों के साथ नक्शा पढ़ने सम्बन्धी बुनियादी कार्य किया जा सके। इसमें दिशाओं को समझना, कौन-सा राज्य कहाँ है, निर्धारित चिह्नों को समझना, आदि शामिल हैं। ग्लोब जैसी चीज़ों के माध्यम से पृथ्वी के घूमने की दिशा, चक्कर लगाने का समय, दिन-रात होना, आदि पर काम किया जा सकता है। यह सामग्री विद्यार्थियों को स्वयं से करने के जितने मौके देगी उतना ही अवधारणाओं के साथ-साथ पढ़ने के कौशल का भी विकास हो रहा होगा। पढ़ने-लिखने की इस प्रक्रिया में शब्द की पहचान करते हुए उचित शब्द से मिलान करना, चित्रों को लेबल करना, आदि मौके बनाते हुए पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसर देना आवश्यक है। यहाँ विज्ञान विषय का एक उदाहरण देख सकते हैं।

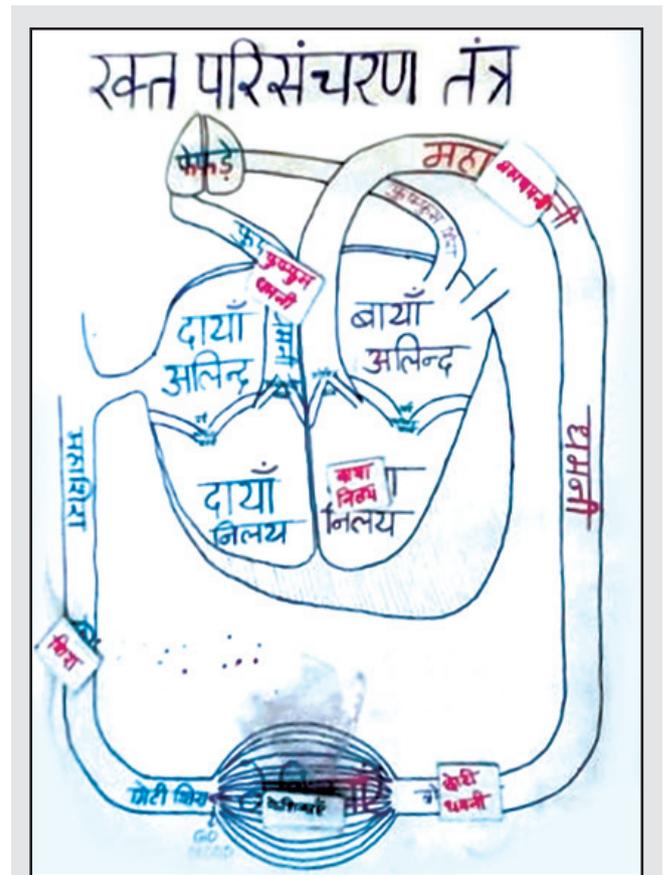
प्रोजेक्ट-आधारित कार्य

प्रोजेक्ट-आधारित कार्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ से गुजरने, उसे समझने और समझाने की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। हमारी पाठ्यपुस्तकें ऐसे भरपूर मौके देती हैं जहाँ हम उन्हें कक्षा के इतर भी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़ सकें। यह अवश्य ध्यान देने योग्य है कि किसी भी विषय से जुड़े टास्क में विद्यार्थियों को मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ



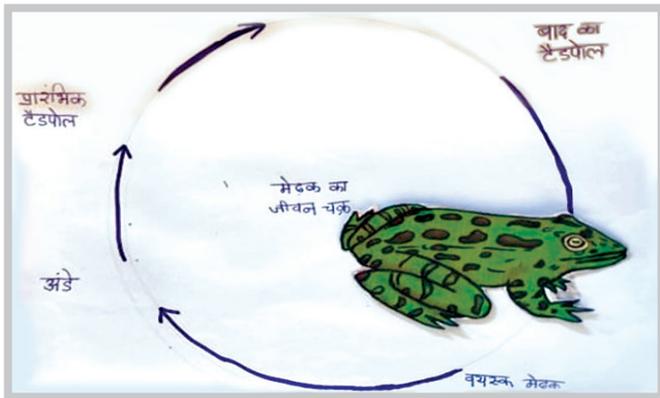
चित्र 2 : ज़मीन पर बने चित्र की मदद से रक्त परिसंचरण तंत्र को समझते विद्यार्थी

लिखित, चित्रों, शब्दों, आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति के मौके भी दिए जाएँ। यह भी देखा जा सकता है कि एक ही टास्क में किस तरह अलग-अलग विषयों से जुड़ी अवधारणाओं का समावेश किया जाए। इस तरह की योजनाबद्ध और व्यवस्थित पद्धति से विद्यार्थियों की भाषा और विषय से जुड़ी अवधारणाओं एवं दक्षताओं को मज़बूती प्रदान की जा सकती है।



इस चार्ट में रक्त परिसंचरण तंत्र का चित्र बना है, जिसपर सम्बन्धित अंगों की शब्दावलियों को लिखा गया है। इसके साथ ही इन्हीं अंगों की शब्दावलियों की पर्चियाँ हैं, जो विद्यार्थी मिलान करते हुए चित्र पर जमाते हैं। अगली प्रक्रिया में विद्यार्थियों को बिना शब्दावली वाला चित्र दिया जा सकता है जिसमें वे अंगों के स्थान खोजकर शब्दावलियों को उपयुक्त स्थान पर जमाएँ।

चित्र 3 : टीएलएम के रूप में रक्त परिसंचरण तंत्र का चित्र



चित्र 4 : मेंढक के जीवन चक्र को समझने के लिए बनाया गया टीएलएम

“

प्रोजेक्ट-आधारित कार्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ से गुजरने, उसे समझने और समझाने की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। हमारी पाठ्यपुस्तकें ऐसे भरपूर मौके देती हैं जहाँ हम उन्हें कक्षा के इतर भी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़ सकें।

”

यहाँ कुछ टास्क के उदाहरण दिए जा रहे हैं :

थीम	विज्ञान	सामाजिक विज्ञान	भाषा से जुड़ाव
मिट्टी एवं फ़सल	<ul style="list-style-type: none"> अपने आस-पास उपलब्ध विविध प्रकार की मिट्टी के बारे में जानकारी जुटाना। मिट्टी में होने वाले बदलावों के बारे में जानकारी एकत्रित करना। अलग-अलग मिट्टी की उर्वरता को समझना। स्थानीय स्तर पर उगाई जाने वाली फ़सलों की जानकारी, उनसे बनने वाले खाद्य पदार्थों की सूची बनाना। 	<ul style="list-style-type: none"> विभिन्न प्रकार की मिट्टियों को समझना, किस मिट्टी में कौन-सी फ़सल लगाई जाती है, जानकारी एकत्रित करना। किस क्षेत्र में कौन-सी मिट्टी पाई जाती है। मसलन, भूरी मिट्टी, पथरीली, लाल, काली मिट्टी, आदि। उसके पीछे के कारणों को खोजना। फ़सलों के बारे में जानकारी इकट्ठी करना, फ़सल चक्र को समझना, सूची बनाना, आदि। अपने शहर, क्षेत्र में कौन-कौन-सी फ़सलें होती हैं, जानकारी एकत्रित करना। 	<ul style="list-style-type: none"> दिए गए टास्क पर जानकारी एकत्रित करना, लिखित रूप में प्रस्तुत करना। मिट्टी में होने वाले बदलावों को अपने शब्दों में लिखना। मिट्टी से सम्बन्धित कोई कविता खोजना, पढ़ना एवं कक्षा में सुनाना।
भोजन	<ul style="list-style-type: none"> भोजन से जुड़े विभिन्न घटकों के बारे में लिखना। किस भोजन से कौन-से पोषक तत्व प्राप्त होते हैं, के बारे में जानकारी एकत्रित करना। खाद्य मील (फ़ूड माइल) बनाना-खेत से थाली तक। 	<ul style="list-style-type: none"> लोग किस-किस तरह का भोजन करते हैं, के बारे में जानकारी इकट्ठी करना। किस क्षेत्र में कौन-सा भोजन खाया जाता है, पता करना। जैसे-गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, आदि में। 	<ul style="list-style-type: none"> सम्बन्धित टास्क को लिखित रूप में प्रस्तुत करना। दाल-बाटी, आदि जैसे किसी एक भोजन को बनाने की विधि लिखना।
जल	<ul style="list-style-type: none"> अपने घर या आस-पास के लोगों से चर्चा करते हुए जल चक्र, अर्थात् पानी कहाँ से आता है, को समझना। 	<ul style="list-style-type: none"> अपने आस-पास उपलब्ध जल के स्रोतों के बारे में जानकारी एकत्रित करना। जैसे-तालाब कैसे बना; कितने साल पुराना है; बावड़ी कैसे बनी; किसने बनवाई; कितने साल पुरानी है; आदि। 	<ul style="list-style-type: none"> जल चक्र का चित्र बनाना, उसे लेबल करना। जिन विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना आता है वे जल चक्र की प्रक्रिया को विस्तार से लिखेंगे। जल के स्रोतों, उनके इस्तेमाल, इतिहास, आदि के बारे में जानकारी इकट्ठी करते हुए अपने शब्दों में लिखना। कक्षा में पढ़कर सुनाना। पानी के ऊपर कोई गीत पता करके सुनाना एवं लिखना।

धातु	<ul style="list-style-type: none"> अपने आस-पास उपलब्ध बॉल, हथौड़ी, चम्मच, बोटल, मटका, घड़ा, आदि जैसी सामग्रियों / बर्तनों की सूची बनाना इन सामग्रियों में कौन-सी सामग्री किस पदार्थ से बनी है; कौन-सी धातु चुम्बक की ओर आकर्षित होती है कौन-सी नहीं; आदि पता करना। 	<ul style="list-style-type: none"> घर के बर्तनों की बनावट, धातु, उसके उपयोग, समयकाल, आदि के बारे में जानकारी एकत्रित करना। मिसाल के तौर पर, पहले किस धातु के बर्तन अधिक इस्तेमाल होते थे; वर्तमान में कौन-सी धातु के बर्तन अधिक इस्तेमाल होते हैं; आदि। 	<ul style="list-style-type: none"> टास्क से एकत्रित जानकारी को अपने शब्दों में लिखना। किसी एक सामग्री की बनावट, उपयोग आदि के बारे में लिखना। बर्तनों के इतिहास को कहानी के रूप में लिखना।
------	--	--	--

विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने का जुड़ाव

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने की दक्षताओं के विकास में समन्वय बनाना सबसे महत्वपूर्ण है। कक्षा शिक्षण के दौरान पढ़ने-लिखने में चुनौती महसूस करने वाले विद्यार्थियों के कार्य करने के सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं को अपनी योजना में शामिल किया जा सकता है :

- शिक्षक यह देख सकते हैं कि किसी अवधारणा को समझने में ऐसे कौन-से काम हो सकते हैं जो विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से कर पाए। जैसे, किसी पाठ पर कार्य करने के दौरान शब्दों को बोर्ड पर लिखना, विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से शब्दों को खोजने और लिखने के लिए कहना, आदि।
- प्रयास करें कि कुछ अभ्यास मिश्रित समूह में हों। इनमें अलग-अलग स्तर के विद्यार्थी शामिल हों, और साथ मिलकर किसी कार्य को करें। मसलन, प्रश्नों पर कार्य करते हुए सम्भावित उत्तर पर चर्चा करना और लिखना, चित्र पर चर्चा करते हुए उसके बारे में लिखित रूप से अभिव्यक्त करना, पाठ को मिलकर पढ़ना, सूची बनाना, आदि।
- विद्यार्थियों के कार्य का स्तरवार विभाजन किया जा सकता है। माने, जिन विद्यार्थियों को लिखने में चुनौतियाँ हैं उन्हें

चित्रों को लेबल करने, रेखाचित्रों, मौखिक, आदि माध्यम से अभिव्यक्ति के मौक़े देना और उन्हें लिखित रूप से लाने में मदद करना, आदि। जो विद्यार्थी पढ़-लिख पा रहे हों उन्हें इस तरह समूह में शामिल करना कि वे दूसरे विद्यार्थियों की मदद कर पाएँ।



उदाहरणों में विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने की दक्षताओं के विकास में समन्वय बनाना सबसे महत्वपूर्ण है।



- बतौर शिक्षक यह भी जानना आवश्यक है कि पाठ की विषयवस्तु को सरल तरीक़े से कैसे पढ़ाया जाए। मसलन, पाठ के मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर लाना, रेखाचित्र, तालिका जैसे माध्यमों से भी विषयवस्तु को समझाने का प्रयास करना, आदि।

यह बहुत आवश्यक है कि पढ़ने-लिखने की चुनौती से जूझ रहे विद्यार्थियों पर विशेष प्रकार से ध्यान दिया जाए। इन्हें कक्षा की हर प्रक्रिया में शामिल किया जाए, और ऐसे मौक़े बनाए जाएँ कि वे धीरे-धीरे भाषाई दक्षताओं को हासिल कर पाएँ।



श्वेता विश्वकर्मा ने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी बेंगलूरु से शिक्षा में स्नातकोत्तर किया है। वे 11 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश के खरगोन ज़िले में पदस्थ हैं। आपकी भाषा एवं भाषा शिक्षण से जुड़े मुद्दों में विशेष रुचि है।

सम्पर्क : shweta.vishwakarma@azimpremjifoundation.org